आचार्य रजनीश (ओशो) का कृतित्व- एक विवेचनात्मक अध्ययन

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrsml.v14.i3.3

प्रीति रानी

शोध छात्र, योग विभाग

महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय धैड़ गाँव, शिव नगर पोखड़ा पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

डॉ.भारत भूषण सिंह

शोध निर्देशिक एवं असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विभाग

महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय धैड़ गाँव, शिव नगर पोखड़ा पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

शोध सार

ओशो के व्यक्तित्व में अनंत आयाम समाहित हैं, शब्दों में उन्हें बांध पाना असंभव है, सर्वाधिक शब्दों का उपयोग करने वाले ओशो सदा निःशब्द को अभिव्यक्त करते रहे। 'आध्यात्मिकता' को दैनिक दिनचर्या में समाहित कर दिया। ओशो के योगदान को वर्णित करने का प्रयास सागर को बूंद से परिभाषित करने जैसा है जो कि गुणात्मक रूप से भिन्न तो नहीं पर मात्रात्मक रूप से अपर्याप्त अवश्य है। ओशो ने नवीन को पुरातन पर वरीयता दी। ध्यान को औषधि रूप में दिया। जागरण को समाधान बताया, परम्परा को निर्मूल नहीं किया वरन परम्परा का शोधन किया। संन्यास को पुनर्जीवित किया। भारत को उसके अर्थ से पुनर्मंडित किया, गुरु-शिष्य परम्परा को उदात्त बनाया, काम को राम की सीढ़ी बता कर काम निंदा से मुक्त किया, ओम्कार का सम्पूर्ण विज्ञान दिया। समस्त संतों की मूल देशना को पुनर्जीवित किया, विश्व के पाखंडों पर निर्भीक प्रहार किया, विश्व को लोकतंत्र का वस्तुगत अर्थ बताया। सत्य को व्यक्तिगत संपदा बता हमें आत्मनिर्भर किया। वेदों से लेकर आधुनिक गुर्जिएफ तक का सूत्र दिया। पंडित- पुरोहित को बेखौफ ललकारा। मानवमात्र के आत्मज्ञान व प्रेम की मशाल प्रज्वलित की, भौतिकवाद को अध्यात्म का पूरक बना दिया, संसार व परमात्मा के द्वैत को समाप्त किया। उत्सव और आनंद को स्वार्थ दृष्टि से मुक्त किया। सच्ची धार्मिकता का सिंहनाद किया, जिसकी अनुगूंज प्रखरतर होती चली जा रही है। ओशो के पास हर प्रश्न का जवाब है और हर जवाब लाजवाब है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से आचार्य रजनीश के कृतित्व को निम्नरूपेण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

बीज शब्द- ओशो, आचार्य रजनीश, कृतित्व, योग, योगदान,

प्रस्तावना-

ओशो का कृतित्व बहुआयामी और गहन है। उन्होंने न केवल आध्यात्मिकता को नई दृष्टि दी, बल्कि जीवन को जीने का एक नया तरीका भी प्रस्तुत किया। उनके विचारों में स्वतंत्रता, प्रेम, ध्यान और जागरूकता का अद्भुत समन्वय मिलता है। यद्यपि उनके विचारों को लेकर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन यह निर्विवाद है कि उन्होंने आधुनिक युग में चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक युग में आध्यात्मिकता, दर्शन और मानवीय चेतना के क्षेत्र में जिन व्यक्तित्वों ने गहरा प्रभाव छोड़ा है, उनमें ओशो का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। ओशो 20वीं सदी के सबसे विवादास्पद किंतु प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरुओं में गिने जाते हैं। उनके विचारों ने पारंपरिक धर्म, समाज और नैतिकता की जड़ताओं को चुनौती दी और एक नए प्रकार की चेतना–व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्रेम, ध्यान और उत्सव पर

आधारित जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया। यह शोध पत्र ओशो के कृतित्व, उनके दार्शनिक विचारों, साहित्यिक योगदान, ध्यान पद्धतियों और आधुनिक समाज पर उनके प्रभाव का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शिक्षा एवं बाल विकास में ओशो का योगदान

बच्चों के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जैसी हम शिक्षा देंगे वैसे ही बच्चों का विकास होगा और जैसे आज के बच्चे होंगे वैसे ही आने वाला कल व राष्ट्र का होगा। अतः शिक्षा एक अहम विषय है, ओशो ने अपनी वाणी के माध्यम से निम्नरूपेण शिक्षा को एक नई दिशा देने का प्रयास है। जैसे-

ओशो ने अपने प्रवचनों में हमेशा इस बात पर जोर दिया कि 'केवल डिग्री हासिल करने के लिए नहीं, बल्कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए पढ़ना चाहिए।' उनकी देशना थी कि जिस क्षेत्र में रुचि हो उसी क्षेत्र में हमें प्रशिक्षण लेना चाहिए। शिक्षा में क्रांति ही सबसे बड़ी क्रांति हो सकती है। 'ओशो का कहना था कि बच्चों पर अपनी मान्यताएं नही थोपनी चाहिए। ओशो की दृष्टि में बालक शिक्षा का केन्द्र होना चाहिए, शिक्षक, विद्यालय, बिल्डिंग, पढ़ाई, लिखाई के कालांश क्रम आदि सहायक हैं। । शिक्षा ऐसी हो जो बच्चों को ध्यान निष्ठता और निर्विचारिता की सुवास से उन्हें परिपूरित करें। बालकों की शिक्षा दमन एवं प्रतिस्पर्धा रहित हो तथा जिज्ञासा, तर्क और वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित, प्रकृति के सान्निध्य में होनी चाहिए । बच्चे की प्राथमिक शिक्षा सौन्दर्य की हो, तनाव की नहीं, विश्राम और शांति की, और प्रेम पूर्ण हो। ओशो ने परम्परागत गंभीर, उदास और नीरस शिक्षा पद्धति के विरुद्ध-ध्यान और हास्य विधा को जोड़कर तथा नृत्य संगीत से जोड़कर इसे सरस उत्सवपूर्ण और सुगम बनाने का प्रयास किया। ओशो कहा करते थे कि 'यदि तुम बच्चों को उनका अनूठापन विकसित करने में सहायक हो सके तो यह मनुष्यता पर तुम्हारा बड़ा उपकार होगा। ओशो कहते हैं 'जब तक शिक्षक बच्चों को पुरानी मान्यताओं से मुक्त कर, उन्हें अज्ञात अनजाने पथ पर कुछ नये की खोज के लिये प्रेरित नहीं करता तब तक देश का कायाकल्प नहीं हो सकता। ओशो का मानना है कि शिक्षा के प्रथम सोपान पर चार वर्षों में मनोवैज्ञानिक बच्चों के साथ रहते हुए उनकी सम्मान और सम्भावनाओं का पता लगाकर, उसको दी जाने वाली शिक्षा की दिशा निर्धारित करें।

'एक महान चुनौती-मनुष्य का स्वर्णिम भविष्य' प्रवचनमाला में शिक्षा के पांच आयामों की चर्चा करते हुए ओशो कहते हैं- 'मैं शिक्षा को पांच आयामों में बांटता हूं। 1- सूचनात्मक शिक्षा- जिसमें मातृभाषा के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान की भाषा अंग्रेजी का सिखाया जाना आवश्यक है। 2-इतिहास के संबंध में उन्होंने विशेष रूप से कहा- अतीत में जो विधायक, सृजनात्मक और महान घटित हुआ हो- सिर्फ उसे ही हम आने वाली पीढ़ी को दें। सभी इतिहास ग्रंथ फिर से लिखे जायें और उनमें उन लोगों का विस्तार से उल्लेख किया जाए जिन्होंने इस ग्रह के सौंदर्य को बढ़ाने में योगदान दिया है। मानवता के विध्वंसक लोगों का नाम मात्र परिशिष्ट या टिप्पणियों में दिया जाये तथा इस बात का भी उल्लेख किया जाये कि ये लोग हीनता की ग्रंथि से पीड़ित विक्षिप्त थे। 3-प्रत्येक बच्चे को यह सिखाया जाना बहुत आवश्यक है कि उसके क्रोध, घृणा, ईर्ष्या और हिंसा को कैसे प्रेम में रूपांतरित किया जाए। 4-कुछ चीजें अनिवार्य होनी चाहिए; जैसे- एक रचनात्मक कला । तुम सृजनात्मक कलाओं के जगत में से कोई भी एक चुन सकते हो- चित्र कला, संगीत, शिल्प कला, मिट्टी के बर्तन बनाना - जो कुछ भी सृजनात्मक है। सृजनात्मकता का हर क्षेत्र स्वीकार हो, जिसमें से विद्यार्थी चुन सके। 5-ओशो ने पांचवा और अंतिम आयाम बतलाया मरने की कला जिसमें ध्यान की सभी विधियां हैं। जिससे छात्र अपने स्वभाव और व्यक्तित्व के अनुसार अपनी विधि और मार्ग का चुनाव कर सकें। वस्तुतः उपरोक्त पांच आयामों को शिक्षा में सम्मिलित करने के लिए सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता होगी।

शिक्षा के जगत में ओशो के सुझाव

ओशो ने औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के सुधार हेतु, उसमें परिवर्तन हेतु, अनेक मौलिक सुझाव दिए हैं। जैसे- ओशो कहते

हैं कि, शिक्षा का एक ही अर्थ है कि हम जीवन की कला सीख सकें। ओशो के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है, 'मनुष्य को आत्मज्ञान व आंतरिक आनंद की प्राप्ति में सहायता देना। केवल आनंदित व्यक्ति ही समाज के काम आ सकता है। ऐसा व्यक्ति हिंसक और ईर्ष्यालु, प्रतियोगी न होकर, प्रेमपूर्ण व करुणा से भरा हो सकता है। प्रतिस्पर्धा एवं महत्त्वाकांक्षा से शिक्षार्थी को दूर रखते हुए ओशो चाहते हैं कि शिक्षा में हम विद्यार्थी को ध्यान और योग जैसी प्रक्रियाओं में से गुजारें जहां उसके भीतर का आनंद प्रगट हो। ओशो का कहना है कि 'जिस प्रकार पदार्थ के विज्ञान की सभी शाखाओं की शिक्षा बच्चों को दी जाती है, उसी प्रकार मन के विज्ञान की शिक्षा दी जाए। ओशो के अनुसार बच्चों को यौन शिक्षा दी जानी चाहिए। ओशो, शिक्षा में अध्यात्मवाद तथा भौतिकवाद के समन्वय के पक्षधर है। ओशो कहते हैं कि हम शिक्षा के जगत में किसी व्यक्ति को प्रवेश कराएं, इससे पहले, वह क्या हो सकता है। मौलिक गुणों को ध्यान में रखकर ही नई शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया जाना चाहिए। ओशो कहते है कि-दुर्भाग्य से शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था हमें यंत्रवत और घोर विचारहीन बना रही है। वास्तविक जीवन मूल्यों की खोज में व्यक्ति की सहायता करना ही शिक्षा का कार्य है। ओशो के दृष्टिकोण में शिक्षा मात्र विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों तक की औपचारिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, वरन वह जन्म के पूर्व से लेकर मृत्योपरांत तक जाती है। शिक्षा हमारे गर्भ में आने से लेकर हमारे जीवन के अन्तिम क्षणों तक विस्तृत है। ओशो की दृष्टि में शिक्षा का प्रारम्भ जन्म के पूर्व से होना चाहिए। तभी उच्च कोटि की आत्माएं जन्म ले सकती हैं। शिक्षा का यह दूसरा चरण ध्यान, सजगता, साक्षी भाव, प्रेम, सृजनात्मकता और करुणा सिखाए। हर विश्वविद्यालय में उन वृद्धों के लिए विशेष कक्षाएं होनी चाहिए जो पेंटिंग सीखना चाहते हैं, मूर्ति कला सीखना चाहते हैं, संगीत सीखना चाहते हैं, नृत्य सीखना चाहते हैं, उन्हें विश्वविद्यालय में फिर से प्रवेश लेना चाहिए। ओशो का कहना है कि- अब शिक्षा का नया दौर शुरू हो। नई शिक्षा व्यवस्था में विकल्प बहुत अधिक होने चाहिए और तुम्हें बहुत सारे विकल्पों में से चुनने का अधिकार होना चाहिए। ओशो कहते हैं कि शिक्षा के बाबत मेरा दृष्टिकोण यह है कि जीवन मात्र प्रतियोगिता न हो, आनंद भी हो। शिक्षा तुम्हें सबके साथ लयबद्ध होने की तैयारी कराये वृक्षों के साथ, पंछियों के साथ, आकाश के साथ, चांद और सूरज के साथ। और शिक्षा तुम्हें 'स्वयं' हो जाने की तैयारी कराए। ओशो का कथन है कि- चाहे कितनी ही कठिनाइयां हों हमें शिक्षा के ऐसे प्रयोग और प्रक्रियाएं खोजनी होंगी जिनमें एक-एक व्यक्ति के भीतर का फूल खिल सके। शिक्षण संस्थाएं फैक्ट्रियां नहीं होनी चाहिये बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की उसकी आत्मखोज में सहयोग के स्थल होने चाहिये। ओशो कहते हैं-अब तक के इतिहास में मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए अनेक क्रान्तियां हो चुकीं हैं। जैसे आर्थिक क्रांति, सामाजिक क्रांति या राजनीतिक क्रांति। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि बुनियादी क्रांति सदा शिक्षा की क्रांति है बाकी सब क्रांतियां परिधि पर हैं। यदि यह क्रांति घटित हो सके तो हम सम्यक् एवं उचित शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।[1]

भाषा और साहित्य जगत में ओशो का योगदान

साहित्य जगत को ओशो की जो सबसे बड़ी देन है वो है उनके लगभग हर विषय पर दिए गए हिंदी और अंग्रेजी भाषा में प्रवचन, जो लगभग 650 पुस्तकों (400 हिंदी ,250 अंग्रेजी) के रूप में लिपिबद्ध हैं। ओशो को पढ़ते हुए ऐसा नहीं लगता कि हम जीवन के साथ बहे जा रहे हैं। ओशो का साहित्य बौद्धिक नहीं है, एक प्राणवान जीवन्त प्रवाह है। ओशो ने उपनिषदों को तो निचोड़ा ही, साथ ही विश्व के सभी सद्गुरुओं के ज्ञान को, चीन, जापान, अरब, ईरान, यूरोप, अमेरिका सभी क्षेत्रों के ज्ञान के मूल तत्व का ज्ञानमधु रूपी दोहन किया। आज ओशो की पुस्तकें आधुनिक मनुष्य के सभी सवालों के जवाब दे रही हैं। ओशो ने विश्व में अध्यात्म की जितनी भी धाराएं हैं, उसके भीतर जो भी सारभूत है उसको उजागर किया है। उस पर चढ़ी हुई धूल को हटाया है और उसको वापस प्रवाहमान किया है, जीवन्त किया है। जिस प्रकार बुद्ध पुरुषों को ओशो ने संजीवनी बूटी पिलाकर प्रस्तुत किया, ओशो ने कवियों, लेखकों,

साहित्यकारों के शब्दों को 'एनलाइटेन' कर दिया, ज्योतिर्मय बना दिया। ओशो ऐसे अनूठे बुद्ध पुरुष हैं जो विद्वता, अभियव्यक्ति एवं अनुभूति की त्रिवेणी का संगम है। इसलिए ओशो का साहित्यिक योगदान अतुल्य है।[2]

ओशो हिन्दी के सुवक्ता हैं। उनके शब्दों में भावों का चिदंबर बनता है। ओशो के बोलने की कला सहज और निरामिष है। ओशो की भाषा के भीतर दो विषम तत्व समीकृत हो गए हैं। उन्होंन तर्क और भाव दोनों को सम्यक स्थान दिया। ओशो ने धर्मों को दिगंबर करने के प्रयोग में 'भाष्य' और 'भाषण' का सहारा लिया। ओशो जो बोलते हैं, लगता है, हमारी चिंतन-प्रक्रिया और अनुभूति-विभावना एक लय हो रही है। ओशो की भाषा में शब्दों कि निर्वचन क्रिया भी अर्थ के पटल खोलती है। ध्यान-समाधि की जिस स्वरदशा को ओशो ने संमोहनशील भाषा संकेत से साधकों को उपलब्ध उपनीत कराया है। उन्होंने भाषा से कृच्छ्र कार्य करवाया है। ओशो के शब्दों का प्रयोग सतर्क और सटीक चयन, वाक्य-विन्यास की निराली शैली, अन्यत्र दुर्लभ है। ओशो ने स्वयं अपनी भाषा को परिभाषित कर दिया है- 'मैं वह कह रहा हूं जोकि शास्त्रों में निहित आत्मा है। मगर शास्त्रों के शब्द में उपयोग नहीं कर रहा है। हिंदी साहित्य को उन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से अनुपम रत्न भेंट किए। हिंदी के सैकड़ों सालों से प्रतिष्ठित भक्ति काव्य को उन्होंने पुनर्व्याख्यातित करके पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। हिंदी को उन्होंने बहुत समृद्ध किया। ओशो इतना कहा है कि उस सागर से कोई कितना भी उलीच लें, जल कम नहीं होगा। जो डुबकी लगाता है वह मुक्ताकोष पाता है। स्वयं ओशो अभी शरीर में विद्यमान नहीं हैं, किंतु वे अपने वाड्मय साहित्य में निरंतर नर्तन करते हुए, भविष्य को राह दिखा रहे है।[3]

स्त्री जगत के प्रति ओशो का योगदान

ओशो ने स्त्री को, उसके पूर्ण अस्तित्व और निजता के साथ स्वीकारा। ओशो ने न केवल स्त्री की स्वतंत्रता की बात की, बल्कि उसको पुरुष के समतल ला खड़ा किया। ओशो ने स्त्री के सम्मान की, संवेदनशीलता की, स्त्री की आजादी की बात की। ओशो कहते हैं कि 'समय आ गया है दस हजार साल में पहली बार कि स्त्रैण गुणों को महत्त्व दिया जाए। ओशो कहते हैं, पुरुष ने दिया हिंसा, युद्ध, आतंकवाद, बलात्कार और पर्यावरण का विनाश यह पुरुष ऊर्जा का योगदान है। अब स्त्री को ऊपर ले आओ, स्त्रैण गुणों को ऊपर ले आओ तो वो लाएगी सुंदरता, प्रेम, समर्पण जिसकी अब जरूरत है ।स्त्री-पुरुष में जो असंतुलन है, वो असंतुलन दूर होना चाहिए नहीं तो पृथ्वी नहीं बच सकती । ओशो साफ कहते हैं कि स्त्री को अत्यधिक सुरक्षा का मोह छोड़ देना चाहिए तभी 'उसका अपना स्त्रीत्व विकसित होगा। ओशो मूलरूपेण निजता (इंडिविजअलिटी) की बात करते हैं। वे स्वयं को खोजने की बात करते हैं। इस निजता में स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है। ओशो ने ध्यान का जो अलख जगाया और सैकडों ध्यान विधियों के प्रयोग किए वे स्त्री जाति के लिए बहुत बडा सशक्तिकरण था। स्त्री के लिए आर्थिक सुरक्षा होना बहत जरूरी है। तभी वह स्वतंत्रता का आनंद ले सकती है। आर्थिक सरक्षा के लिए किसी के ऊपर निर्भर रहना दुःखद है। ओशो ने नारी के लिए एक नया आसमान खोल दिया, लेकिन साथ में वे यह भी कहते हैं कि जब तक पुरुष विकसित नहीं होता. जब तक वह अपने श्रेष्ट होने के अहंकार से मुक्त नहीं होता, तब तक नारी मुक्त नहीं हो सकती । स्त्रियां इतनी हजारों साल से दबी हैं. उनको थोडा सा एक्स्टा मौका देना होगा तभी वे उभर पाएंगी और उनके भीतर की छिपी प्रतिभा निखर पाएगी । ओशो ने अतीत में नारी के साथ किए गए अन्याय, उत्पीडन और शोषण को महसूस करते हुए नारी को सर्वाधिक सम्मान गरिमा और स्वतंत्रता दी। उन्होंने कम्यनों के संचालन में स्त्रियों को सर्वोच्च पदों पर प्रतिष्टित किया। ओशो ने स्त्री को न केवल उनके उसी रूप में स्वीकारा बल्कि उन्हें पूरी तरह खिलने की स्वतंत्रता भी दी। यहां तक कि संन्यास जैसी उदात्त एवं ऐतिहासिक परम्परा को एक नारी से प्रारम्भ किया।[4]

ओशो ने स्त्री को जितनी आजादी, सम्मान और विकास के अवसर दिए उतने मानवता के इतिहास में किसी ने नहीं दिए। लेकिन उन पर जो सेक्स गुरु का लेबल चिपका-और चिपकाने

वाले परुष ही हैं- उसने उनके इस महत्वपूर्ण योगदान को नजरअंदाज कर दिया है । स्त्री के लिए बनाए गए सारे मूल्य पुरुष ने बनाए हैं और उन्हें स्त्रियों ने अपना लिया है। इसी सोच की नींव पर नारी मुक्तिवादी आंदोलन खड़ा है। ओशो ने पहली बार कहा, नारी पुरुष से भिन्न है जरूर लेकिन असमान जरा भी नहीं है। ओशो कहते हैं कि धरती पर लेडीज फर्स्ट का चलन है। एक शिष्टाचार के तहत औरतों को अग्र क्रम दिया जाता है। लेकिन यह स्त्री का अपमान है, सम्मान नहीं। स्पेशल प्रोटेक्शन उनके लिए होते हैं जो कमजोर हैं, दीन हैं और पिछड़े हए हैं। स्त्रियों को इंकार कर देना चाहिए कि उन्हें अलग से कुछ स्पेशल चाहिए । स्त्री और पुरूष दोनों को एक साथ, एक विकास के अवसर मिलने चाहिए।[5]

राजनीति के क्षेत्र में ओशो का योगदान

ओशो की छवि एक आध्यात्मिक गुरु की है, परंतु उन्होंने देश एवं देश की राजनीति को लेकर जो भी कहा है, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं व्यावहारिक है। देश के नेता यदि ओशो की देशनाओं को गौर करके उन्हें अमल में लाने की कोशिश करें, तो राजनीति के माध्यम से देश को शिखर पर पहुंचाया जा सकता है।

राजनीति और नेताओं के बारे में ओशो कहते हैं कि ' जितनी कुर्सी की पूजा कम हो जाये, उतने ही गलत लोग कुर्सी की तरफ जाना बंद कर देंगे। ओशो कहते है कि- मैं चाहता हूं कि तुम्हारे मन से राजनीति की प्रतिष्ठा समाप्त हो जाये। प्रतिष्ठा समाप्त होगी तो प्रतिष्ठा-लोलुप व्यक्ति उस तरफ जाने अपने आप बंद हो जायेंगे। आदर ही देना है, तो कुछ ऐसी चीजों को आदर दो, जो लोगों के जीवन में बढ़ें, तो जगत सुंदर बने, मनोरम हो, यह पृथ्वी स्वर्ग बने। तुम गौतम बुद्ध के देश में हो, तुम कृष्ण के देश हो, तुम पतंजलि के देश में हो। तुमने उन सितारों को जन्म दिया है, जिनका कोई मुकाबला दुनिया में नहीं है। ओशो ने चेतावनी देते हुए बताया कि संपन्न राष्ट्रों ने परमाणु शस्त्रों का इतना बड़ा खतरा इकट्ठा कर लिया है कि कभी भी यह पृथ्वी कुछ ही क्षणों में एक बार ही नहीं तीस बार नष्ट हो सकती है। उन्होंने एक पृथ्वी, एक मनुष्य और एक विश्व सरकार का मंत्र दिया। जाति-पाति, धर्म, राष्ट्रीयता, रंग या वर्ण का कोई भेदभाव न हो, जहां कोई भूखा, नंगा और दरिद्र न हो। पर उनके अनुसार ऐसा होना केवल विश्व सरकार के अंतर्गत ही संभव है। वोट का अधिकार केवल शिक्षित लोगों को हो और विधायक या संसद सदस्य कम से कम ग्रेजुएट और पोस्टग्रेजुएट हों। चुनाव के बाद उनका गहन प्रशिक्षण हो, जिसमें ध्यान आवश्यक हो। मंत्री अपने विषय के विशेषज्ञ या पी.एच.डी हो। देश के योग्यतम शिक्षाविद, अर्थशास्त्री और कुशलतम डॉ. ही शिक्षा मंत्री, वित्त मंत्री तथा स्वास्थ्य मंत्री हो। इस देश के नेताओं को आध्यात्मिक गुरुओं से शिक्षा लेनी चाहिए, ज्योतिर्मय, बुद्ध, ज्ञानियों से शिक्षा लेनी चाहिए, न कि तांत्रिकों, पुरोहितों, स्वार्थ सिद्ध करने वाले पाखंडी बाबाओं से। वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं हृदय से एक संन्यासी ही हैं, ओशो को उन्होंने पढ़ा है। ओशो ने राजनीति के बारे में कहा कि 'गणतंत्र को गुणतंत्र बनाया जाये। समाजवाद पर ओशो ने सुंदर बात कही है- सोशलिज्म इज द नेचुरल आफटरमाथ ऑफ कैपिटलिज्म। जब पूंजी देश में ओवरफ्लो होगी तो अपने आप समाज में फैल जायेगी। तो समाजवाद को लाने के लिए सबसे पहली जरूरत है कि आप पूंजी को उत्पन्न करो। बिना पूंजी के आप बांटोगे क्या? ओशो ने भारतीय राजनीति के सम्बन्ध में कहा कि 'अभी यह हो रहा है कि अच्छे आदमियों को बुरा आदमी रिप्लेस कर रहा है। और बुरा आदमी एक दफा जब अच्छे आदमी को हटाता है, तो उसका परिणाम यह होता है कि पांच साल बाद उससे भी बुरा आदमी उसको हटा सकेगा, उससे और बुरा आदमी आ सकेगा। भारतीय राजनीति में परिवर्तन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए ओशो डेमोक्रेसी के स्थान पर मेरीटोक्रेसी का समर्थन करते हैं। लोकतंत्र के स्थान पर गुणतंत्र होना चाहिए। इसका स्वरूप क्या होगा इस पर ओशो कहते हैं कि 'मेरी दृष्टि है कि गांव-गांव में नागरिक समितियां होनी चाहिए। नागरिक समिति की भूमिका को रेखांकित करते हुए ओशो कहते हैं कि 'नागरिक समिति अच्छे लोगों से प्रार्थना करे कि आप खड़े हो जाएं। तो अच्छा आदमी धीरे-धीरे बुरे आदमी को रिप्लेस कर देगा। जिस

दिन धर्म ऐसे साधु पैदा करेगा जो सैनिक भी हो सकते हैं, जिस दिन धर्म ऐसे सन्त पैदा करेगा, जो सत्ता पर भी रहकर जीवन को संचालित कर सकते हैं, तभी हम जीवन को बदलने में समर्थ हो सकते हैं अन्यथा नहीं। श्रम एवं उत्पादन के पारस्परिक रूप से घटते सम्बन्ध पर ओशो कहते हैं कि 'तकनीक का विकास इस जगह ले आया है कि मनुष्य का श्रम, उत्पादन में अनावश्यक हो गया है।

ओशो समाजवाद के लिये पूंजीवाद को अनिवार्य मानते हैं। यदि समाजवाद लाना है, तो पूंजीवाद को ठीक से विकसित करना होगा क्योंकि पूंजीवाद के आखिरी छोर पर समाजवाद है। विकास के विभिन्न चरणों को स्पष्ट करते हुए ओशो कहते हैं कि सामन्तवाद की सन्तान पूंजीवाद है, जबकि समाजवाद पूंजीवाद की सन्तान है। वे कहते हैं कि मां की हत्या करके सन्तान पैदा नहीं की जा सकती है।ओशो कहते हैं कि 'हमें सदैव ध्यान रखना चाहिये कि समाजवाद व्यक्ति को समाप्त करके नहीं आयेगा वरन उसे तृप्त करके फुलफिल करके, व्यक्ति को पूरा करके आयेगा। ओशो कहते हैं कि समाजवाद पूंजीवाद का चरम विकास है। पूंजीवाद के विकसित होने पर ही समाजवाद का जन्म हो सकता है। समाजवाद वास्तव में सम्पत्ति के वितरण की व्यवस्था है, जबकि पूंजीवाद सम्पत्ति उत्पन्न करने की व्यवस्था है। यदि सम्पत्ति रहेगी नहीं, तो वितरण किसका किया जायेगा ? ओशो की दृष्टि है कि अब विचार पूंजीवाद एवं समाजवाद पर नहीं बल्कि विचार एवं सोच इसकी करनी चाहिए कि तकनीक के विकास से जो उत्पादन हो, उसके वितरण की क्या व्यवस्था होगी, कैसे डिस्ट्रीब्यूशन हो, किस आधार पर ? ओशो स्वतंत्रता एवं समानता पर कहते हैं कि' प्रत्येक आदमी को इतनी स्वतंत्रता चाहिए कि उससे दूसरे की स्वतंत्रता पर बाधा न पड़ती हो। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में देखा जाए तो ओशो की देशना पर राजनीतिक दृष्टि से विचार प्रारम्भ करना निश्चित ही राजनीतिक चिन्तन को नये आयाम दे सकता है। आज की राजनीति की दशा को देखते हुए ओशो के विचार भारत को एक नयी दिशा दे सकते हैं।[6]

धर्म एवं अध्यात्म जगत को ओशो का योगदान

धर्म और अध्यात्म के सभी विषयों पर जितना ओशो बोले हैं, शायद ही कोई बोला हो। जीवन के सभी अंगों की गहराई में उतरकर ओशो ने विरोधाभासी प्रतीत होने वाले तत्वों के भीतर छिपे समन्वय के रहस्य को उद्घाटित किया है। ओशो ने मनुष्य चेतना के विकास का अभियान शुरू किया और सभी धर्मों के धर्मग्रंथों पर भाष्य किया। धर्म के संबंध में ओशो कहते हैं- 'पृथ्वी पर से इन सभी प्रस्थापित धर्मों को विदा हो जाना चाहिए। हर व्यक्ति ध्यान के द्वारा अपने मूल स्वभाव को जाने। इस मूल स्वभाव को ही ओशो ने धर्म कहा हैं। धर्म और विज्ञान में आज तक विरोध पाया गया है। ओशो कहते हैं, 'जब मनुष्य क्रियाकांड के मुर्खतापूर्ण व अर्थहीन बातों से मुक्त होगा, तब वह भीतर की चेतना की तरफ मुड़ेगा। ऐसा चैतन्यपूर्ण आदमी जब वैज्ञानिक खोज में लगेगा तब धर्म और विज्ञान में विरोध नहीं सामंजस्य होगा। पूरब, पूरब है और पश्चिम, पश्चिम है, और इनमें कभी मेल नहीं हो सकता, ओशो इस बात को नहीं मानते। ओशो धर्म के साथ जुड़े गंभीरता को हटाने का प्रयास करते हैं। गंभीरता की जगह ओशो उत्सव का सूत्र देते हैं। उनके लिए धर्म परम उत्सव है। ओशो की सभी ध्यान-विधियां इसी उत्सव की तरफ बढ़ावा देने वाली है। विरोधाभास में समन्वय साधने की ओशो की जो शैली है, उसमें 'जोरवा दि बुद्धा' शिखर जैसा है। इसका अर्थ है, संसार में रहकर बुद्धत्व का शिखर प्राप्त करना।[7]

ओशो ने धर्म की जगह धार्मिकता पर बल दिया। उन्होंन कहा कि- 'मैं धार्मिकता सिखाता हूं धर्म नहीं', भगवान नहीं, भगवत्ता।'। ओशो कहते हैं- व्यक्तिवाची शब्द की जगह गुणवाची शब्द ज्यादा इंपार्टेट है। ओशो ने धर्म की जगह धार्मिकता। भगवान की जगह भगवत्ता। इन शब्दों को रखा। ओशो ने जीवन के प्रति अखंड विधायक सर्वस्वीकार का भाव तथा समग्र अस्तित्व की पुलक से भरा उत्सव, आनन्द, नृत्य, संगीत और रस से सराबोर सहज सरल दर्शन दिया। जिस उदास, गंभीर और ऊबाऊ धर्म से युवक उससे विमुख हो गये थे, उन्होंने ओशो के

जीवन दर्शन को अहोभाव से अपनाया। ओशो ने एक विश्वव्यापी धर्मरहित धर्म दिया जिसे धार्मिक होना कहते हैं। उन्होंने कहा- 'priest and the politicians are the mafia of soul' पुरोहित और राजनीतिज्ञ ही वे अपराधी तत्व हैं जो आत्मा को घुन की तरह चाट जाते हैं। यह विचार ओशो ने अपनी अंग्रेजी प्रवचन पुस्तक the rebel (विद्रोह) में हमें व्यक्त किए हैं। ओशो ने हिन्दुओं, जैनों ,बौद्धों ,यहूदी, सूफियों, आदि को अपनी और आकर्षित किया। ओशो लोगों को रूढ़ियों, परंपराओं और अंधविश्वासों से मुक्त कर रहे थे। वह धीमे-धीमे उन्हें धर्म में मुक्त होकर धार्मिक बनना सिखा रहे थे। ओशो पारम्परिक हिन्दू धर्म के विरोध में नहीं थे। गीता, अष्टावक्र महागीता, उपनिषदों आदि पर ओशो की व्याख्या इतनी मौलिक, सटीक, तार्किक गृहय और वैज्ञानिक है की चाहे पूर्व का हो या पश्चिम का, हर युवा उसे आत्मसात कर लेता है।ओशो कहते है कि- धर्म का एक संगठन की तरह, एक क्रियाकांड की तरह होना गलत है। क्योंकि, मेरे देखे, धर्म नितांत वैयक्तिक है। धर्म का कोई संगठन नहीं हो सकता है। क्योंकि सत्य एक है और यूनिवर्सल है। मैं निश्चित रूप से ही धर्म को विषाद से, आत्म-उत्पीड़न से, स्वयं को सताने से हटा कर आनंद का एक उत्सव बनाना चाहता हूं।[8]

ओशो कर्मकाण्ड से ऊपर उठकर ध्यान साधना में प्रवृत्त होने का सन्देश आजीवन देते रहे। ओशो ने ध्यान की अनेकानेक विधियां बतायीं, कुछ विधियां तो सीधे-सीधे मनोचिकित्सीय विधियां है जिसमें सनातन परम्परा की मूल दृष्टि 'साक्षी भाव' को जोड़कर उन्होंने उसे रेचन आदि का रूप दिया। जिससे मनोग्रन्थियों का विसर्जन होकर व्यक्ति स्वस्थ होता है।[9] ओशो कहते हैं, प्रश्न कोई भी हो, समस्या कोई भी हो, उत्तर एक ही है : ध्यान। निरंतर नित प्रतिदिन ध्यान को दैनिक जीवन चर्या का अंग बनाना होगा जैसे कि भोजन-पानी।[10] देव वाणी ध्यान, तथाता ध्यान, कीर्तन ध्यान, प्रार्थना ध्यान, कुण्डलिनी ध्यान, चक्रा ब्रीदिंग, नो माइंड, मिस्टिक रोज, विपश्यना आदि विधियों में उन्होंने सनातन ध्यान एवं साधना को ही नए कलेवर में प्रस्तुत कर पुनर्स्थापित किया है।[11]

धर्म व अध्यात्म जगत में ओशो के योगदान को सारसूत्र के रूप में कहना हो तो कह सकते हैं- अतीत की संपूर्ण धारणाओं से मुक्त, ध्यानपूर्ण, प्रेमपूर्ण उत्सव मनाता नया मनुष्य इस पृथ्वी पर अवतरित हो, यही उनका योगदान है।

भविष्योन्मुखी योगदान

ओशो कोई आम गुरु नहीं थे कि स्वयं को आध्यात्मिक या धार्मिक विषयों तक ही सीमित रखते हैं। ओशो ने आध्यात्मिक एवं धार्मिक विषयों के साथ साथ अन्य विषयों को न केवल अपनी वाणी दी बल्कि भविष्य में होने वाली समस्याओं के प्रति आगाह भी किया। ओशो ने तीस-पैंतीस वर्ष पूर्व जो भविष्यवाणियां करते हुए चेतावनियां दी थीं, वे अब सत्य सिद्ध हो रही हैं। अपनी गोल्डन फ्यूचर तथा रिबेल ग्रंथों में ओशो कहते हैं कि यह इतना सुंदर ग्रह पृथ्वी किसी भी क्षण नष्ट हो सकता है। विकसित देशों के कारखानों ने इतनी अधिक कार्बन डाइऑक्साइड गैस का उत्सर्जन किया है, जिससे कि पृथ्वी का तापक्रम बढ़ गया है। ध्रुव प्रदेशों और पर्वतों पर स्थित ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और समुद्र में जल का स्तर तेजी से बढ़ रहा है। आगामी कुछ वर्षों में समुद्रतट पर स्थित सभी नगर जलसमाधि ले लेंगे। ओशो भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 1984 में देश को एड्स के प्रति सचेत किया था। कई बातें उन्होंने पचास साल पहले कह दी जो हम अब आप देख रहे हैं। ओशो कहते थे 'जिससे प्रेम है उसके साथ रहो शादी की क्या जरूरत है? लीगल बॉन्डेज नहीं होनी चाहिए। आज लोग लीविंग रिलेशनशिप की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसा ही परिवार नियोजन पर 1969 में प्रवचन दिया था, उसके बाद से अब जनसंख्या दुगनी हो गई है। उस समय अगर उन्हें सुना जाता तो शायद आज भारत में जितनी समस्याएं हैं, जनसंख्या की, गंदगी की, करप्शन की शायद न होती।

ओशो कहते हैं अगर सब कुछ इसी प्रकार चलता रहा तो तुम पृथ्वी पर जीवन को बीस वर्षों से अधिक नहीं देख सकोगे। कारण पांच हैं- पहली समस्या - आण्विक हथियारों का अंबार प्रतिदिन बढ़ना। दूसरी समस्या है- जनसंख्या वृद्धि। इस सदी

के अंत तक सात अरब लोग होंगे इस पृथ्वी पर और पृथ्वी का इस बुरी तरह से शोषण किया गया है कि यह इतनी अधिक जनसंख्या नहीं संभाल सकती। तीसरी समस्या - एड्स की बीमारी जो कि दावानल की भांति फैल रही है। चौथी समस्या- जिसका मनुष्य को अगले बीस वर्षों में सामना करना है वह है पर्याजैविकी इकोलॉजी का ढह जाना। पांचवीं समस्या- जो कि मनुष्य स्वयं है। काले और गोरे के बीच, पूर्व और पश्चिम के बीच के अपने सारे भेद-भावों सहित, और एक नया भेद भाव भी अचानक पैदा हो गया है। उत्तर और दक्षिण के बीच। परन्तु यदि हम अपनी समस्याओं को समाधानों के पर्दे से हटकर सीधा देखना शुरू कर सकें तो भारत की ऐसी कोई भी समस्या नहीं है जो हल न हो जाए। अगर हम पुरानी नैतिक मान्यताओं की व्यर्थता को समझ सकें तो नई नैतिक मान्यताएं पैदा की जा सकती हैं। अगर हम पुराने आधारों को ही युवकों पर न थोपे चले जाएं, तो हमारे युवक की शक्ति मुक्त हो सकती है और देश के सृजन में लग सकती है।[12]

निष्कर्ष

ओशो ने इस जगत को जो दिया है उसका मूल्यांकन होने में सदियां लग जायेंगी! क्योंकि ओशो किसी एक वर्ग विशेष जाति या देश के लिए नहीं हैं वे पूरी मनुष्यता के लिये हैं। अंततः, ओशो का संदेश यही है कि सत्य किसी बाहरी स्रोत में नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निहित है और उसे अनुभव करने के लिए जागरूकता, साहस और स्वतंत्रता आवश्यक है।ओशो बहुआयामी हैं और वे एक नई श्रृंखला की शुरुआत हैं। इसलिए उन्होंने पूरब और पश्चिम के सभी आयामों में अध्यात्म के जगत में जो भी श्रेष्ठतम जाना गया है उसको भलीभांति परख कर उसमें से श्रेष्ठतम को चुनकर नये मनुष्यों के लिए तैयार किया है।

संदर्भ सूची

1-सदैव शशिकांत, (2020), ओशो का इस जगत को योगदान, प्रभाकर प्रकाशन पांडव नगर, ईस्ट दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 139-161

2-सदैव शशिकांत, (2020), ओशो का इस जगत को योगदान, प्रभाकर प्रकाशन पांडव नगर, ईस्ट दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 184-188

3-सदैव शशिकांत,2010,कौन है ओशो,डायमंड पॉकेट बुक्स,ओखला, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 219- 226

4-सदैव शशिकांत, (2020), ओशो का इस जगत को योगदान, प्रभाकर प्रकाशन पांडव नगर, ईस्ट दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 130-136

5-सदैव शशिकांत,2010,कौन है ओशो,डायमंड पॉकेट बुक्स,ओखला, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 238-241

6-सदैव शशिकांत, (2020), ओशो का इस जगत को योगदान, प्रभाकर प्रकाशन पांडव नगर, ईस्ट दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 162-173

7-सदैव शशिकांत,2010,कौन है ओशो,डायमंड पॉकेट बुक्स,ओखला, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 227- 232

8-सदैव शशिकांत, (2020), ओशो का इस जगत को योगदान, प्रभाकर प्रकाशन पांडव नगर, ईस्ट दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 111-120

9-सत्यार्थी स्वामी आनंद,(2010,चतुर्थ संशोधित संस्करण),सक्रिय ध्यान के रहस्य ,ओशो दर्शन आश्रम, सदरपुर गढ़शंकर-144527 (पंजाब),पृष्ठ संख्या-37

10-सत्यार्थी स्वामी आनंद,(2010,चतुर्थ संशोधित संस्करण),सरल ध्यान विधियाँ-भाग-1, ओशो दर्शन आश्रम, सदरपुर गढ़शंकर-144527 (पंजाब),पृष्ठ संख्या- 6

11-सत्यार्थी स्वामी आनंद,(2010,चतुर्थ संशोधित संस्करण),सरल ध्यान विधियाँ-भाग-2, ओशो दर्शन आश्रम, सदरपुर गढ़शंकर-144527 (पंजाब),पृष्ठ संख्या- 8-28

12-सदैव शशिकांत, (2020), ओशो का इस जगत को योगदान, प्रभाकर प्रकाशन पांडव नगर, ईस्ट दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 215-224